श्रीयाप्य विषय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स



त्या ग्री क्षेत्र क्ष

व्यार्अं अम्बि रादे वट् र् भ्रूर राधिया वयार्क्षाक्षेटाविते वटाट्याञ्चराचा धेर्या स्त्रियाः भ्रीता स्था रहिता स्तर में वा वलार्स्राञ्चराचार्स्रास्त्रराष्ट्रीःचाधिषा गञ्जाबाकाः भू गानिकाः ग्री तर्शे दिन हो दारा र दिना म्द्रियास्यार्थे यात्र प्रियास्य त्रिंदर प्राप्त सेंद्र ग्राव या यया वया पर सेंगा <mark>यवा विश्व स्प्रम्य प्रमुख्य व्याप्य प्रमुख्य विश्व विष्य विश्व विष्य व</mark> য়'ৢৢয়য়'য়ৢয়য়ৢয়'ৢঢ়য়ৢ৾ঢ়'য়য়য়৾ঀয় अर्वे र्वेदे न्य्य न राज्य मर्ख्या राधिया न्दुःग्रहेग्'गुरु'हु'देंद्'ग्री'र्य'दर्घेच'र्वेग्। <u> यत्र यत्र पत्रे में पत्री पत्र पत्री अया चिया रा धिया।</u> पत्रिय 'लया स्था प्रवि 'क्षेय 'ग्रीय' प्रग्रीय 'प्रम् भी <mark>६.भैंथ.घश्रय.२८.८भैंट्य.८भ</mark>ेंश्य.चेय.रा.लुया स्यर्र् यात्र्यार्यं व्यात्र्यार्यं व्या म्नूयाळेंग्रान्तु अन्तु मुरानुयारा धेया बुट इयवायायाया मुना प्रमा कुट पर में गा याता विया वया यमा ता विष्टा पा धीया। त्रिंर पर श्रे गव्या घर तथा तर्घेत पर रेंगा नर्वा वीषा नमुस्या ध्रवा स्वा नते । नते । यह । यह व वावयः भ्रान्याळें सेटावटा येटास्वास्याळें वाया

श्रम् : श्री ।

श्रम् : श्रम् : श्री ।

श्रम् : श्रम्म : श्रम्म : श्रम्म : श्रम्म : श्रम् : श्रम्म : श्रम्य

डेबायात्ति दे आववा गुपाळेदारी वायह गुरा अर्ह्पायह न